Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

वर्तमान समय में शैक्षिक चुनौतियां एवं उनके समाधान हेतु सुझावों का अध्ययन - भारतीय परिपेक्ष्य में।

डॉ. यदु शर्मा [1], रूचि सोनी [2*]

[1] प्राचार्य, एस.एस. जैन सुबोध. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर जयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोधार्थी, शिक्षा विभाग राजस्थान-विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *रूचि सोनी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18611102

सारांश

आज के तकनीकी युग में शिक्षा मनुष्य के जीवन के लिए अति आवश्यक बनी हुई है शिक्षा के बिना मानव जीवन की कल्पना करना वर्तमान में एक असामान्य बात लगती है। तकनीकी क्षेत्र में एक दूसरे से आगे निकलने के लिए विकासशील देशों में युद्ध छिड़ा हुआ है किसी देश को तभी पहचान जाता है कि इसकी तकनीकी कितनी समृद्ध शक्तिशाली है। शिक्षा के माध्यम से ही संभव है कि कोई देश तकनीकी रूप से कितना व आर्थिक रूप से कितना विकसित होगा। वर्तमान समय में शिक्षा को सुगम बनाने के लिए सरकार व विभिन्न प्रकार की नीति निर्धारण की गई है परंतु फिर भी शिक्षा का प्रचार और प्रसार से ही प्रकार से नहीं हो पा रहा है अर्थात सभी को शिक्षा नहीं मिल पा रही है। जब तक शिक्षा के प्रचार प्रसार से जुड़ी हुई समस्याओं को स्थाई रूप से नहीं निवृत्त किया जाता तब तक शिक्षा सभी के लिए संभव नहीं हो पाएगी। करने के बावजूद भी विभिन्न प्रकार की समस्याएं शिक्षण संस्थाओं, शिक्षकों व अध्यापकों के सामने आ रही है छात्र भी इन समस्याओं से अछूते नहीं है।

प्रस्तुत पत्र में इन्हीं सभी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है वह उनके समाधान हेतु उचित उपाय सूज गए हैं ताकि भविष्य में इस प्रकार की संभावनाओं से बचा जा सके व राष्ट्र को एक विकसित राष्ट्र बनाया जा सके।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 06-01-2026
- **Accepted:** 28-01-2026
- **Published:** 11-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 120-123
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. यदु शर्मा, रूचि सोनी. वर्तमान समय में शैक्षिक चुनौतियां एवं उनके समाधान हेतु सुझावों का अध्ययन - भारतीय परिपेक्ष्य में।. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2): 120-123.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: शिक्षा, शैक्षिक चुनौतियाँ, शैक्षिक समस्याएँ, तकनीकी शिक्षा, शिक्षा का निजीकरण

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के लिए शिक्षा इसकी बुनियादी पहचान व उसकी ऊपरी इमारत को मजबूत करती है यदि नहीं हुई कमजोर होगी तो वह देश खड़ा नहीं रह पाएगा इसलिए उचित है कि शिक्षा के संसाधन महिया कराए जाएं ताकि शिक्षा सभी के लिए सुगम व सुलभ बन सके। इसी के साथ-साथ शिक्षा को वर्तमान तकनीकी से जोड़कर देखना भी अति आवश्यक है यदि विकासशील देशों की होड़ में बने रहना है तो अपने आप को विकासशील देशों की होड़ में बनाए रखना है तो तकनीकी के माध्यम से शिक्षा का प्रचार प्रसार करना अति आवश्यक है। वर्तमान समय में बहुत सी समस्याएं शिक्षा के मार्ग में अवरोधन बनी हुई है जिसके समाधान हेतु विभिन्न प्रकार के कार्य किया जा रहे हैं परंतु फिर भी सफलता प्राप्त नहीं हो रही है जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों का कम नामांकन, बालिकाओं की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित न करना, यातायात की उचित साधनों की कमी, संसाधनों की कमी, ग्रामीण क्षेत्रों

© 2026 डॉ. यदु शर्मा, रूचि सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

में अभी भी शिक्षा के प्रति कम रुझान, आदि बहुत सी समस्याओं का सामना आज भी भारत कर रहा है उनके समाधान हेतु उचित उपाय करना अति आवश्यक है ताकि भारतवर्ष एक विकसित राष्ट्र बन सके वह सभी शिक्षित हो सके।

मुख्य शब्दावली - शिक्षा, शैक्षिक चुनौतीया, शैक्षिक समस्या, निवारण आदि।

वर्तमान समय में शैक्षिक चुनौतियां -

वर्तमान समय में भारतवर्ष विभिन्न शैक्षिक चुनौतियों का सामना कर रहा है जिनका विवरण इस प्रकार है –

शिक्षा के लिए उचित संसाधनों की कमी - वर्तमान समय में भारत में अन्य देशों की तुलना में जो विकसित राष्ट्र हैं तकनीकी शिक्षण पद्धति का अभाव देखा जा सकता है हमारी शिक्षण पद्धति अभी भी कहीं ना कहीं प्राचीन पद्धति से जुड़ी हुई है या यह कहे कि हम तकनीकी को पूर्णता शिक्षा में नहीं अपना पाए हैं जो हमारी शिक्षा पद्धति को अथवा शिक्षक स्तर को निम्न स्तर का बना रहा है।

शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी - शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी आज भी ग्रामीण क्षेत्र के साथ-साथ शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले कामगार लोगों मैं देखी जा सकती है वह जहां पर कार्य करते हैं इस क्षेत्र में अधिकतर उनके बच्चे भी कार्य करने लगते हैं यदि उनके बच्चों को उचित शिक्षा प्रदान कर दी जाए तो व अपने जीवन स्तर को सुधार सकते हैं।

रोजगार परक पाठ्यक्रम की कमी - भारतीय शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार का है कि वह केवल ज्ञानवरदान का कार्य करती है रोजगार पर शिक्षा का अभाव आज भी भारतवर्ष में देखा जा सकता है जिसके कारण व्यक्ति शिक्षित हो जाता है परंतु व किसी कुशल में निपुण नहीं हो पता है इसलिए अति आवश्यक सा आवश्यक है कि शिक्षा को कौशल में बनाकर समाज को कौशल में पारंगत किया जाए ताकि व्यक्ति किसी न किसी रोजगार में लिप्त होकर अपना जीवन स्तर सुधर सके।

शिक्षा में तकनीकी का अभाव - भारतीय शिक्षा प्रणाली में तकनीकी का अभाव देखा जा सकता है तकनीकी संसाधनों से युक्त शिक्षक प्रणाली अभी भी अभाव है इसलिए अति आवश्यक है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में तकनीकी शिक्षण व्यवस्था को उचित स्थान प्रदान किया जाए।

विद्यालयों में कम नामांकन दर - विद्यालयों में निम्न गुणवत्ता दर की शिक्षा होने के कारण व नामांकन दर निजी क्षेत्र के विद्यालयों में अधिक होने के कारण सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की नामांकन दर आती कम है जिसके कारण भारतीय शिक्षा की जान कहीं जाने वाली प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था कहीं निम्न स्तर की दिखाई पड़ती है जो भारतीय शिक्षण व्यवस्था में एक अहम अवरोधन का कार्य करता है।

शिक्षकों की कमी - भारत के विद्यालयों महाविद्यालयों में शिक्षक छात्रों का अनुपात आज भी बहुत अंतराल पर है यदि विद्यालयों में शिक्षक ही उपलब्ध नहीं होंगे तो शिक्षण कार्य कौन करेगा इसलिए यह अवरोधन भी शिक्षक के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभा रहा है यदि महाविद्यालय में शिक्षक ही नहीं होंगे तो विद्यालयों में अभिभावक अपने छात्रों को क्यों प्रवेशित कराएंगे उनका विश्वास धीरे-धीरे सरकारी विद्यालयों से समाप्त हो जाएगा।

शिक्षा का निजीकरण - आज शिक्षा का निजीकरण करके सरकार द्वारा शिक्षा को एक व्यक्ति द्वारा जो किसी विद्यालय का प्रबंधक अथवा प्राचार्य हो सकता है का एकमात्र महापौर समझा जा सकता है उसी के आदेश पर उसे विद्यालय में शिक्षण कार्य व वहां की गतिविधि संचालित होती है सरकार का विद्यालय की फीस व अन्य चीजों पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है जिसके कारण सरकारी विद्यालय में शिक्षकों की कमी व निजी क्षेत्र के विद्यालयों में फीस की अतिरिक्त भरमार व अन्य चीजों की भरमार के कारण ग्रामीण क्षेत्र का बच्चा विद्यालय तक नहीं पहुंच पाता है। जो शिक्षा के अवरोधन में एक अहम भूमिका निभा रहा है।

शिक्षा का व्यवसायीकरण - आज शिक्षा का व्यवसाय कारण पूर्णतया हो चुका है व्यावसायिक कारण से हम भली-भांति अवगत है कि व्यवसाय कारण का एकमात्र उद्देश्य लाभ अर्जित करना है जबकि लाभ के लिए शिक्षा उपलब्ध कराना भारतीय परंपरा व प्राचीन शैली के खिलाफ है परंतु सरकारी नीतियों में समाज के रूप को देखते हुए आज शिक्षा का व्यवसाय कारण लगातार बढ़ता जा रहा है जिसके कारण आज शिक्षा सभी के लिए सुलभ वह गुणवत्ता परक नहीं रह गई है जो शिक्षा के क्षण में एक अहम अवरोधन का कार्य कर रहा है।

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर हम देख सकते हैं कि किस प्रकार शिक्षक को विभिन्न चुनौतियों से गुजरना पड़ रहा है वह शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार की चुनौतियां वर्तमान में सामने आ रही है खास कर भारतीय परिपेक्ष में इसकी एचएमटी को देखा जा सकता है यदि इन समस्याओं का निवारण स्थाई रूप से नहीं किया जाता है तो भारत में शिक्षा का प्रचार प्रसार से ही प्रकार से नहीं हो पाएगा व भारत का प्रत्येक नागरिक अपने मूल अधिकारों से वंचित रह जाएगा।

शिक्षा में चुनौतियों के समाधान हेतु उपाय -

शिक्षा में चुनौतियों के समाधान के लिए निम्नलिखित सुझावों को विस्तार पूर्वक समझा जा सकता है जो शिक्षा को एक हम बोल देकर इसको आगे बढ़ा सकते हैं वह अवरोधन को समाप्त कर सकते हैं जो निम्न प्रकार है –

उचित शिक्षण पद्धति का चुनाव - भारतीय शिक्षा प्रणाली आज भी पूर्वगृह से प्रभावित है भारतीय शिक्षा पद्धति आज भी आधुनिकता को अपने में असमर्थ है भारतीय समाज में तकनीकी का अभाव देखा जा सकता है विभिन्न क्षेत्रों में खासकर शिक्षा के क्षेत्र में यदि शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी को बढ़ावा मिल जाए तो भारत वर्ष विकसित देशों की सूची में शीघ्र ही अपना स्थान अंकित करेगा।

विद्यालयों में शिक्षकों की वर्तमान परिस्थिति के अनुसार प्रशिक्षण - भारतीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रशिक्षण इस प्रकार दिया जाता है कि उसमें किसी प्रकार का कौशल युक्त शिक्षक प्रदान करना संभव नहीं हो पा रहा है जिसके कारण शिक्षक अपनी पुरानी पद्धति के

© 2026 डॉ. यदु शर्मा, रूचि सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अनुसार शिक्षण कार्य कर रहे हैं जिसके कारण विद्यालयों से निकलने वाले छात्र केवल किताबी ज्ञान के अनुसार ही जीवन यापन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं इसलिए अति आवश्यक है कि शिक्षा देने वाले शिक्षकों को कौशल में प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वह छात्रों को विभिन्न कौशलों में पारंगत कर सके।

सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन व उचित देखभाल - भारतवर्ष में शिक्षा के लिए नई नीतियों व नई नियमावली तो बनती रहती है परंतु उनका सही प्रकार से रखरखाव व उसका क्रियान्वयन नहीं हो पता है जिसके कारण बजट का भी वह होता है वह जो रिजल्ट हम चाहते हैं वह प्राप्त नहीं होता है इसलिए अति आवश्यक है कि इसकी नियमित देखभाल वह इसको धरातल पर क्रियान्वित किया जाए ताकि सभी को सरकार की नई-नई शैक्षिक योजनाओं का लाभ मिल सके व छात्र अपना साथ साथ देश विकास का विकास कर सकें।

विद्यालयों में शिक्षकों की सत प्रतिशत नियुक्ति - सरकारी विद्यालयों में वह प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति नियमावली के अनुसार व योग्यता के अनुसार होना अति आवश्यक है यदि शिक्षक ही विद्यालय में पूरे नहीं होंगे तो शिक्षण कार्य कौन करेगा जिसके कारण अभिभावक व छात्रों में लापरवाही देखे जा सकती है इसलिए बहुत जरूरी है कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की पूर्ति सही से की जाए ताकि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के बच्चे निजीकरण को छोड़कर सरकारी विद्यालयों में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त कर सके।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को तकनीकी से जोड़कर - वर्तमान शिक्षा पद्धति में तकनीकी को जोड़कर शिक्षा प्रदान करना भी अति आवश्यक है यदि हम तकनीकी को इधर किनारे करके शिक्षा को देखते हैं तो शिक्षा व शिक्षक इसके बिना नहीं हो पाएगा इसलिए अति आवश्यक है कि शिक्षण कार्य के लिए शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग उचित माध्यमों से किया जाए ताकि छात्र व अभिभावक अधिक से अधिक लाभ कमा सके वह एक अध्यापक भी तकनीकी के प्रयोग से पारंगत हो सके।

निजी विद्यालयों के लिए सख्त कानून बनाकर - निजी विद्यालयों में अनियमित व मनमानी रोकने के लिए नियमित देखभाल वह सख्त कानून बनाना अति आवश्यक है व यहां की फीस नियमावली निर्धारित की जाए ताकि एक साधारण परिवार का विद्यार्थी भी यहां से शिक्षा प्राप्त कर सके निजीकरण विद्यालयों के कारण ही आज शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि यह सभी के लिए आसान बात नहीं रही है जिसका सरकारी विद्यालयों की स्थिति सही में होना संभवत है।

'प्राथमिक स्तर पर संपूर्ण भारत में समान शिक्षा प्रणाली लागू करने पर - यह भी अति आवश्यक है की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम एक समान होना चाहिए ताकि संपूर्ण भारत के विद्यालयों को प्राथमिक शिक्षा एक ही फ्रेम में प्रदान की जा सके वह पाठ्यक्रम को नवीन नवीनीकरण कौशलों से जोड़ा जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी किताबों तक ही सीमित नहीं रहकर कौशल युक्त शिक्षा प्राप्त कर सकें।

पाठ्यक्रम का नवीनीकरण व आधुनिकता से जुडा होना - पाठ्यक्रम को नवीन तकनीकियों से युक्त कराकर नई-नई कौशलों से जोड़ना चाहिए ताकि विद्यार्थी वह अभिभावकों में नई उमंग में नहीं उत्साह का सृजन हो सके वह अध्यापकों में भी नए प्रकार से शिक्षक प्रदान करने के कौशल विकसित हो सके क्योंकि पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण प्रदान करना भारत के लिए एक बहुत ही बड़ी समस्या हो सकता है।

शिक्षा के लिए तकनीकी साधनों को उपलब्ध कराकर - जैसा कि हम पहले भी बात कर चुके हैं की संपूर्ण विश्व आज तकनीकी रूप से अपने आप को सक्षम वह सबसे अग्रणी बनाने की होड़ में लगा हुआ है इसलिए अति आवश्यक है कि शैक्षिक गतिविधियों को तकनीकी से जोड़ा जाना चाहिए वह इसी के अनुसार शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ताकि सभी छात्र व समाज तकनीकी के सामान्य प्रयोग से अवगत हो सके वह इसका प्रयोग अपने जीवन यापन वह आजीविका चलाने में आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में कर सके।

ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में सत प्रतिशत नामांकन द्वारा - ग्रामीण वह शहरी क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों में अति आवश्यक है कि वहां के विद्यार्थियों को शिक्षा में नामांकन के लिए मध्य किया जाए ताकि वह नियमित रूप से विद्यालय आ सके में पठन-पाठन क्रिया कर सकें साथ ही क्षेत्रों के रह रहे निवासियों को भी शिक्षा की अहमियत के बारे में बताया वह नियमित प्रोग्राम चलाए जाने चाहिए ताकि वह शिक्षा की अहमियत को समझ सके वह छात्रों का नामांकन विद्यालयों में सत प्रतिशत कर सके वह नामांकन के बाद किसी प्रकार का अवरोधन ना हो इसके लिए अति आवश्यक है कि समय-समय पर उसे क्षेत्र के निवासियों को विद्यालय गतिविधियों से अवगत कराया जाता रहे सत प्रतिशत नामांकन ही इस देश की शिक्षा व्यवस्था को सुधारने में एवं भूमिका निभाएगा।

उपरोक्त बिंदुओं के विश्लेषण के अनुसार हम कह सकते हैं कि शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है जिसके लिए अति आवश्यक है कि शिक्षा के लिए उचित संसाधन उपलब्ध कराए जाएं वह आधुनिक शिक्षा को आधार बनाकर शिक्षा प्रदान की जा सके इन्हीं बिंदुओं को वह इसके साथ-साथ अन्य मुद्दों पर नियम व कानून बनाकर शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाया जा सकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर हम निष्कर्ष प्राप्त करते हैं कि शिक्षा मानव जीवन का एक अमूल्य व आवश्यक अंग है परंतु तकनीकी युक्त शिक्षा भी बहुत आवश्यक है वर्तमान समय में तकनीकी ही भारत को विकसित राष्ट्रों की लाइन में लाकर खड़ा करने में अपनी अहम योगदान दिखाएंगे यदि हम नामांकन दर्शन प्रतिशत कर लें वह तकनीकी युक्त शिक्षा व संसाधनों युक्त शिक्षा प्रदान करें वह अपने विद्यालय के शिक्षकों को समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाए तो शिक्षण व्यवस्था को निश्चित ही सुधर जा सकता है भारतवर्ष एक विशाल देश है जो प्राचीनतम शिक्षण पद्धति से अभी भी शिक्षा प्रदान करता है इसको ध्यान में रखते हुए ही नई शिक्षण पद्धतियों को विकसित किया जाए ताकि भारत की संस्कृति वह परंपरा भी नष्ट ने हो वह भारत एक नए राष्ट्र के रूप में विकसित हो सके। अर्थात अति

© 2026 डॉ. यदु शर्मा, रूचि सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आवश्यक है कि मानव शिक्षा की अहमियत को समझे वह इसके अवरोधन में आने वाले विभिन्न प्रकार के मध्य तत्वों को निकाल कर एक सम शिक्षण व्यवस्था स्थापित करें ताकि सभी को शिक्षा निशुल्क आसानी से प्राप्त हो सके यही इस पत्र में प्राप्त हुए हैं।

संदर्भग्रंथ सूची

1. फ्लैग पी. मीडिया के सामाजिक सरोकार. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स; 2007.
2. मीणा राम लखन. मीडिया विमर्श: आधुनिक संदर्भ. दिल्ली: कल्पना प्रकाशन; 2018.
3. श्रीवास्तव जतिन, रॉय एनाक्षी. सैद्धान्तिक परिदृश्य: भारतीय न्यू मीडिया परिवेश से जुड़े मुद्दे. In: नारायण एन, सेन सुनेत्रा, नारायणन शालिनी, संपादक. इंडिया कनेक्टेड: न्यू मीडिया के प्रभावों की समीक्षा. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स; 2019.
4. मुखर्जी राधाकमल. चिंतन परंपरा. नेशनल पीयर रिव्यूड जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज. 2023 जन–जून:156–157. बरेली (उप्र): समाजविज्ञान विकास संस्थान.
5. Kaur K, Singh J. ICT diffusion and divide in India: Implications for economic policies. Pacific Business Review International. 2016;1.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

डॉ. यदु शर्मा एस.एस. जैन सुबोध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान) के प्राचार्य हैं। वे शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक प्रशासन एवं प्रशिक्षण पद्धतियों के क्षेत्र में अनुभवी शिक्षाविद् हैं। उनके नेतृत्व में महाविद्यालय शैक्षणिक उत्कृष्टता, नवाचार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षक निर्माण की दिशा में कार्यरत है।

रूचि सोनी राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के शिक्षा विभाग में शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि शिक्षा के समकालीन मुद्दों, शिक्षण-प्रशिक्षण पद्धतियों तथा शैक्षिक नवाचारों में है। वे शोध के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षक विकास और शैक्षिक नीतियों के प्रभावों का अध्ययन कर रही हैं।

© 2026 डॉ. यदु शर्मा, रूचि सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/